Roll No. : ..... Total Pages : 7

3641-R

B.A. (Third Year) Examination, 2017

SANSKRIT

Paper – I

(वैदिक व लौकिक काव्य एवं गद्य)

Time : Three Hours
Maximum Marks : 100

PART–A [Marks : 20]

(खण्ड-अ)

Answer all questions (50 words each).
All questions carry equal marks.
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART–B [Marks : 50]

(खण्ड-ब)

Answer *five* questions (250 words each). Select *one* question from each unit. All questions carry equal marks.
प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART–C [Marks : 30]

(खण्ड-स)

Answer any *two* questions (300 words each).
All questions carry equal marks.
कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART–A

(खण्ड-अ)

1. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये :

UNIT–I

(इकाई–I)

(i) इन्द्रसूक्त के देवता व ऋषि का नाम लिखिये।

(ii) ''तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।'' में किन धर्मों की बात कही गयी है?

UNIT–II

(इकाई–II)

(iii) ''एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो।'' किसने क्यों कहा?

(iv) शोकादि से तरकर कौन स्वर्ग में सुख भोगता है?

UNIT–III

(इकाई–III)

(v) वनेचर ने किससे किस प्रकार के वचनों को दुर्लभ कहा?

(vi) ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' सूक्ति का आशय स्पष्ट कीजिये।

UNIT–IV

(इकाई–IV)

(vii) द्रोपदी कृत अर्जुन की दुर्दशा का वर्णन कीजिये।

(viii) वृकोदर की दुर्दशा के विषय में द्रौपदी ने क्या कहा?

UNIT–V

(इकाई–V)

(ix) शुकनास ने अनर्थपरम्परा के कौन-से हेतु बताये?

(x) लक्ष्मी क्षीरसागर से कौन-से विरह विनोद चिन्हों को लेकर निकली?

PART–B

(खण्ड-ब)

UNIT–I

(इकाई–I)

2. निम्नलिखित मंत्रों में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्।।

अथवा

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास् तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

UNIT–II
(इकाई–II)

3. निम्न में से किसी **एक** मंत्र की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

आशाप्रतीक्षे संगतं सूनृतां च इष्टापूर्ते पुत्रपशुँश्च सर्वान्।
एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यानश्नन्वसति ब्राह्मणो गृहे।।

अथवा

न साम्पराय: प्रतिभाति बालं प्रभाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढ़म्।
अयं लोको नास्ति पर इति मानी पुन: पुनर्वशमापद्यते मे।।

UNIT–III
(इकाई–III)

4. अधोलिखित श्लोकों में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

तथापि जिह्म: स भवज्जिगीषया तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यश:।
समुन्नयन् भूतिमनार्यसंगमाद् वदं विरोधोऽपि समं महात्मभि:।।

अथवा

कथाप्रसंगेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डल - सूनुविक्रम:।
तवाभिधानाद् व्यथते नतानन: स दु:सहान्मन्त्र - पदादिवोरग:।।

UNIT–IV
(इकाई–IV)

5. निम्न श्लोकों में से किसी **एक** श्लोक की संस्कृत में सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते विवर्तमानं नरदेव वर्त्मनि।
कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरित: शमीतकं शुष्कमिवाग्निरुच्छिख:।।

अथवा

विधिसमयनियोगाद् दीप्तिसंहारजिह्नं शिथिलवसुधमगाधे मग्नमापत्पयोधौ।
रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानं दिनादौ दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूभ्यः।।

UNIT–V

(इकाई–V)

6. निम्न गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(क) यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षाल्ननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः। अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः। अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रं समुद्भूतरजोभ्रान्तिरति दूरमात्मेच्छया यौवनसमये पुरुषं प्रकृतिः।

(ख) इन्द्रियहरिणहारिणी च सततमतिदुरन्तेयमुपभोगमृगतृष्णिका। नवयौवनकषयितात्मनश्च सलिलानीव तान्येव विषयस्वरूपाण्या-स्वाद्यमानानि मधुतराण्यापतन्ति मनसः। नाशयति च दिङ्मोह इवोन्मार्गप्रवर्तकः पुरुषभमत्यासङ्गो विषयेषु।

(ग) अप्रत्ययबहुला च दिवसान्तकमलमिव समुपचितमूल-दण्डकोशमण्डलमपि मुञ्चति भूभुजंम्। लतेव विटपकान-ध्यारोहति। गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुद्चञ्चला। दिवस-करगतिरिव प्रकटितविविधसंक्रान्तिः।

(घ) कुलीरा इव तिर्यक् परिभ्रमन्ति। अधर्मभग्नगतयः पङ्गव इव परेण सञ्चार्यन्ते। मृषावादविषविपाकसञ्जातमुखरोगा इवातिकृच्छ्रेण जल्पन्ति। सप्तच्छदतरव इव कुसुमरजोविकारैरासन्नवर्तिनां शिरः शूलमुत्पादयन्ति।

PART–C

(खण्ड-स)

UNIT–I

(इकाई–I)

7. विष्णु अथवा वाक् देवता के स्वरूप पर प्रकाश डालिये।

UNIT–II

(इकाई–II)

8. 'कठोपनिषद्' के आधार पर नचिकेता का चरित्र-चित्रण कीजिये।

UNIT–III

(इकाई–III)

9. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग के आधार पर भारवेरर्थगौरवम्' कथन की विवेचना कीजिये।

UNIT–IV
(इकाई–IV)

10. सप्रमाण भारवि के स्थितिकाल पर प्रकाश डालिए।

UNIT–V
(इकाई–V)

11. 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिये।